साक्षात्कार

डॉ. घनश्याम बादल

नमस्कार सर ,

हार्दिक अभिनंदन और साभार स्वागत है आपका ।

साहित्यक सूर्य की आभा को आप निरंतर चारों ओर प्रसारित करने के प्रयास में लगे हैं । इसके लिए हम नयी गूँज के समस्त सम्पादक मंडल की तरफ से आपको बधाई देते हैं । सर लेखन द्वारा समाज में वैचारिक क्रांति ले आना ही इस रास्ते की मंजिल है । लेखक मानस पटल को निर्मल भी बनाता है और सोये हुए मनुज को झकझोर कर जगा भी देता है ।

ऐसे ही अनुपम उद्देश्य को लेकर, आप अपनी कलम के साथ लोगों के ह्रदय स्थल की यात्रा पर हैं । हम और हमारे पाठक आप के विचारों से नयी गूँज में प्रकाशित लेखों के माध्यम से परिचित होते रहें हैं ।

आज हमारा सौभाग्य है कि आपके साक्षात्कार के माध्यम से आपके जीवन के अनुभवों को जान पाएंगे ।

एक बार फिर से आपका स्वागत करते हुए आपसे वार्ता को प्रारंभ करते हैं

1. सर सबसे पहले हमें अपना पूरा नाम , शैक्षणिक उपलब्धियों और वर्तमान मे आप किस पद पर हैं, इससे अवगत करवाएं

उत्तर: सर्वप्रथम तो 'नई गूंज'को साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु बहुत-बहुत बधाई। साथ ही साथ पूरी संपादकीय एवं रचनाधर्मी लेखक टीम को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं। मेरा पूरा नाम डॉ घनश्याम बादल है और शैक्षणिक दृष्टि से मैं स्कूली शिक्षा में निरंतर प्रथम श्रेणी एवं अपनी कक्षाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते हुए 12वीं कक्षा पास की। जे वी जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय सहारनपुर से स्नातक एवं बी एड तथा एम एड की शिक्षा प्राप्त की तत्पश्चात राजस्थान में झुंझुनू के सेठ मोतीलाल स्नातकोत्तर कॉलेज से व्यक्तिगत रूप से हिंदी में परास्नातक किया। लेखन एवं पत्रकारिता के साथ-साथ शिक्षण के प्रति मेरी रुचि शुरू से ही रही और इसी के चलते मैंने 1986 में झुंझुनू राजस्थान के आदर्श बाल निकेतन में शिक्षण कार्य शुरू किया। तत्पश्चात 1995 में केंद्रीय विद्यालय संगठन में मेरा चयन हुआ और अब तक मैं वहीं पर अंग्रेजी के अध्यापक के तौर पर निरंतर कार्यरत हूं। संप्रति में केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2, रुड़की में नियुक्त हूं। मेरे लिए हर्ष का विषय है कि मेरे विद्यार्थियों ने निरंतर अच्छा प्रदर्शन करते हुए 100% परीक्षा परिणाम बोर्ड परीक्षा में दिया है तथा बहुत सारे ऐसे विद्यार्थी हैं जो देश-विदेश में उच्च पदों पर कार्यरत हैं।

2. सर , हमें अपने परिवार तथा प्रारंभिक शिक्षा के बारे में बताएं।

Scanned with OKEN Scanner

उत्तर: मेरा जन्म किसी बहुत संपन्न परिवार में नहीं हुआ यद्यपि परिवार पहले काफी समृद्ध था लेकिन महज 9 माह की आयु में मेरे पिताजी का स्वर्गवास हो गया और परिवार को संघर्ष करना पड़ा । हम सात भाई-बहन थे और मां को जीवन यापन तथा हमें पालने पोषने एवं पढ़ाने लिखाने हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ा लेकिन मैंने कभी भी अपनी पूज्य माताजी को हिम्मत हारते नहीं देखा और हर कठिन परिस्थिति का सामना करते हुए भी उन्होंने हम सभी भाई बहनों को यथासंभव पढाया लिखाया । इस कार्य में मेरे भाइयों ने भी मुझे बहुत प्रोत्साहित किया । स्वाभाविक रूप से मेरी शिक्षा मेरे मूल गांव नागल बढ़ेडी के सरकारी प्राइमरी एवं जूनियर स्कूल में हुई वहां के शिक्षकों की प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन के चलते हुए मैंने पांचवी एवं आठवीं कक्षा के बोर्ड में जिला स्तर पर स्थान बनाया । तत्पश्चात वहीं के जनता इंटर कॉलेज से प्रथम श्रेणी में कक्षा 10 एवं 12वीं की परीक्षाएं विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते हुए उत्तीर्ण की । जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है मेरी स्नातक एवं पर स्नातक स्तर की पढ़ाई सहारनपुर से पूर्ण हुई।

3. सर साहित्य की ओर आप की रुचि का प्रारंभ कहाँ से हुआ ?

उत्तर: मुझे स्वयं नहीं पता कि साहित्य मेरे अंदर कब और कहां से आया । पारिवारिक पृष्ठभूमि कहीं से भी साहित्य या लेखन अथवा सृजन से नहीं जुड़ी थी । हां, मुझे याद है कि मेरी माता जी प्रतिदिन संध्यावंदन करती थी एवं मैं भी उनके साथ बैठता था मैंने नोट किया कि परंपरागत भजन या आरतियों में वे पढ़ी-लिखी न होने के बावजूद भी बहुत ही रोचक तरीके से परिवर्तन करते हुए उसमें कुछ न कुछ जोडती रहती थीं । शायद वही से सृजनशीलता मेरे हृदय में आई । मुझे यह भी याद है कि हमारे घर में मेरे स्वर्गीय पिताजी की खरीदी हुई श्रीमद् भागवत गीता रखी हुई थी जिसे मैं संभवत चौथी या पांचवी कक्षा से ही पढ़ने में रुचि लेने लगा था खासतौर पर महात्मा वाले अध्याय मुझे बहुत अच्छे लगते थे । हो सकता है वहां से भी साहित्य का प्रवेश मेरी आत्मा में हुआ हो । तत्पश्चात शुरुआती तौर पर मैंने बाल पत्रिकाएं एवं स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर के अखबार बहुत पढे वहां से भी हो सकता है साहित्य की ओर जाने का जाने अनजाने में रुझान हुआ होगा लेकिन उसे छोटे से कस्बे से जब दो छोटे-छोटे अखबार निकले और उसमें कई लोगों के नाम या उनकी कहानी, कविताएं आदि छपी तो मुझ में भी यह ललक जगी कि मुझे भी कुछ लिखना है । बालबुद्धि के चलते स्कूल की कॉपी के पन्नों पर या पोस्टकार्ड पर लिखकर ही मैं लेटर बॉक्स में डाल देता था । फिर मैं स्थानीय पत्रकार आनंद बत्रा सुमन को प्रेस लाइन से अखबारों के पते नोट करते हुए देखा और वहां से पता उतार कर मैंने नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान जागरण एवं पंजाब केसरी जैसे अखबारों को चीट्ठियां स्तंभ हेतु लिखकर भेजना शुरू किया और आपको जानकर हर्ष होगा कि 1978 में जब मैं आठवीं कक्षा में था तब पहली बार मेरा पत्र दैनिक नवभारत टाइम्स के चिट्ठियां कॉलम में छपा था । बस, उसके बाद तो ललक बढ़ती गई और चिट्ठियों से बाल कविताएं कार्टून बनाना छोटी-छोटी कहानी लिखना शुरू हो गया । फिर सहारनपुर से प्रकाशित होने वाले दैनिक खबरवाला, दैनिक विश्वा मानव, दैनिक हमारा फैसला जैसे कई अखबारों में निरंतर के साथ छपना शुरू हो गया। यहां तक कि स्नातक करते-करते मुझे संपादकीय पृष्ठों पर स्थान मिलने लगा । लेकिन साहित्य की दृष्टि से यह विकास झुंझुनू जाने के बाद अधिक हुआ । वहां पर दैनिक नवज्योति, दैनिक राजस्थान पत्रिका, दैनिक राष्ट्रदूत जैसे बड़ी संख्या में प्रसारित होने वाले

Scanned with OKEN Scanner

अखबारों में मेरी कविताएं छपी तत्पश्चात कुछ एजेंसियों के साथ जुड़ाव हुआ और फिर तो देशभर में लिखने छपने का सिलसिला शुरू हो गया जो अब तक जारी है।

4 . सर , आपके प्रेरणा स्त्रोत के बारे में बताएं , जिनके शब्दों ने आपको ताकत दी। आप आज अपनी उपलब्धियों का श्रेय किन्हें देना चाहेंगे ?

उत्तर: यह प्रश्न मेरे लिए बड़ा मुश्किल है अब किसका नाम लिया जाए और किसका छोड़ जाए । समय-समय पर एक नहीं अनेक लोगों ने मुझे प्रेरित किया । बचपन में आनंद बत्रा सुमन जी ने मुझे 11वीं कक्षा में ही अपने अखबार विस्फोटक एवं बाद में नागल बुलेटिन इन में संयुक्त संपादक के रूप में जोड़ा । उन्हें ही देखकर लिखने का सिलसिला शुरू हुआ । हालांकि वे मूलतः है पत्रकार थे और मेरी रुचि साहित्य में अधिक थी । स्कूली शिक्षा के दौरान ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के तहत मैंने अनेक नाटको एवं कवि सम्मेलनों में हिस्सा लिया जिनम मुझे सबसे पहले कवि शिवराम शर्मा तुक्कड़ के रूप में काव्य पाठ करने का मौका मिला साथ ही साथ प्रखर कवि राम अवतार त्यागी को कवि के रूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ । मुझे रोमांटिक कविताओं या गीतों ने कभी बहुत अधिक प्रभावित नहीं किया बल्कि मुझे हमेशा ही दलितों वंचितों एवं पीड़ितों के हक में लिखी गई कविताएं पसंद आई और मैं इस ओर मुड़ गया । झुंझुनू में रहते हुए मंचों पर मुझे राजस्थान एवं दूसरे प्रदेशों में भी जाने का अवसर मिला जहां काफी सराहना मिली । लेकिन एक कवि के रूप में मुझे नागार्जुन, दुष्यंत, अज्ञेय और धुमिल सदा प्रेरित करते रहे । झुंझुनू में रहते हुए ही वहां के मशहूर शायर जनाब युसूफ झुनझुनवी के माध्यम से मुझे प्रत्यक्ष रूप से बड़े-बड़े कवियों से मिलने एवं उनके साथ काव्य पाठ करने का मौका मिला । वहीं के सुप्रसिद्ध हास्य कवि विमलेश राजस्थानी का आशीर्वाद भी मुझे निरंतर मिला । आज भी मुझे वही वरिष्ठ और युवा रचनाकार पसंद है जो दलितों , दमितो एवं वंचितों के हक के लिए लिखते हैं। जिनकी रचनाओं में सामाजिक सौहार्द्र पैदा करने की ललक के साथ साथ अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ खुलकर लिखा जाता है।

5. सर आपके आदर्श किन्हें मानते हैं?

इस प्रश्न के जवाब में भी मुझे बहुत सोचना पड़ेगा । बहुत सारे शिक्षक, बहुत सारे कवि लेखक एवं यहां तक कि मेरे शिष्य भी मेरे लिए आदर्श हैं लेकिन मेरे मन की गहराइयों में सबसे ऊपर स्थान मेरी माता जी का है और उन्हें ही मैंने सदा अपना आदर्श माना है।

6. सर , आज साहित्य से युवा वर्ग ने एक दूरी सी बना ली है, किताबों की जगह इन्टरनेट ने ली है। क्या यह एक चिंताजनक विषय नहीं ? क्या सुझाव देना चाहेंगे आप युवाओं को इस विषय में ?

मैं इस बात से सहमत नहीं हूं । आज भी एक से बढ़कर एक युवा लेखन एवं सृजन कार्य कर रहा है । हां, उसका लिखने का ढंग शैली और तरीका अलग है । समय के साथ बदलाव एक अनिवार्य एवं आवश्यक चीज है आज कागज के बजाय मोबाइल या लैपटॉप अथवा दूसरी प्रविधियों के माध्यम से लिखा जा रहा है तो इसमें कुछ बुराई भी नहीं है । इंटरनेट के आने से ज्ञान का स्रोत खुला है लेकिन चिंता की बात यह है कि एक ऐसा मेकैनिज्म खड़ा हो गया है कि मौलिकता का इससे बहुत ह्रास हो रहा है और जाने अनजाने में अश्लीलता भी समाज में फैल रही है ।

Scanned with OKEN Scanner

वास्तव में यह चिंता का विषय है । एक बात और कहूंगा कि जब आवश्यकता से अधिक और आसानी से प्राप्त होने लगता है तब नया सृजन करना मुश्किल हो जाता है और इसीलिए इंटरनेट का साहित्य पर विपरीत प्रभाव भी पड़ा है । मैं युवाओं से आग्रह करूंगा कि खूब पढ़ें लिखें लेकिन अपनी मौलिकता से कतई समझौता न करें । महज इसलिए नहीं लिखना कि लिखना है बल्कि इसलिए लिखें कि उसे लिखने के पीछे एक उद्देश्य है, समाज एवं राष्ट्र कल्याण तथा शोषित वर्ग के उत्थान का उद्देश्य लेकर लिखेंगे तो निश्चित रूप से आगे बढ़ेंगे । एक बात और देखा देखी या किसी को भी आदर्श मानकर उस जैसा लिखने का प्रयास बिल्कुल न करें । आप आप हैं और आपको अपने जैसा ही बनकर मौलिक साहित्य का सृजन करना है।

7. एक लेखक का बहुत बड़ा सामाजिक दायित्व होता है । वो चाहे तो कलम से क्रांति ला सकता है , क्या आपको लगता है सर आज के लेखक इस कसौटी पर खरे उतर रहें हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर 'हां' भी है और 'न' भी । बेशक लेखक का सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व बहुत बड़ा है और कलम से बड़ी क्रांति कोई ला भी नहीं सकता। मगर केवल ऐसा लेखन ही क्रांति ला सकता है जो यथार्थ के धरातल से जुड़ा हो । समस्याओं को समझता हो और उन्हें सही स्वर देने में सक्षम हो । आज के ज़माने में लेखकों की एक बड़ी भारी फौज खड़ी हो गई है इसमें कुछ बुरा भी नहीं है लेकिन टिकता वही है जिसमें गुणवत्ता होती है । आज भी बहुत सारे लेखक बहुत अच्छा लिख रहे हैं । रही बात कसौटी पर खरे उतरने की तो मैं नहीं मानता कि लेखकों को किसी कसौटी पर कसा जाना चाहिए । लेखन मौलिक है, सकारात्मक है, आम आदमी एवं भविष्य को ध्यान में रखकर लिखा है तो निश्चित ही खरे सोने सा चमकता भी है । चापलूसी, जोड़-तोड़ या लेन-देन को माध्यम बनाकर लिखने वाले लंबे समय तक इस क्षेत्र में रह ही नहीं सकते हैं।

8. सर , आप की साहित्यिक उपलब्धियों को हम और हमारे पाठक विस्तार से जानना चाहते हैं, जिससे हमारे पाठक भी लेखन के लिए स्वयं को प्रेरित महसूस करेंगे।

मुझे नहीं लगता कि मेरी साहित्यिक उपलब्धियां कोई बहुत उल्लेखनीय हैं। मैं तो विशेष तौर पर स्वांत: सुखाय एवं जब कुछ घटनाओं से मन अशांत हो जाता है बस उसे लेखनीबद्ध कर देता हूं । शिक्षक रहते हुए पिछले करीब 38 साल से हर वर्ष दो-तीन दो-तीन सामाजिक सरोकारों के एकांकी लिखता निर्देशित एवं प्रस्तुत करता रहा हूं । अब तक देश के छोटे बड़े स्थानीय ,राष्ट्रीय ,अंतरराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में कितने लेख छपे हैं यह खुद मुझे भी नहीं पता । पर, निश्चित ही यह संख्या हजारों में है । पुस्तकों के रूप में अट्टे बट्टे,एवं टप्पर-टूं के रूप में दो पुस्तकें अभी तक लिखी है और कई सारी पुस्तकों की संकल्पना मन में है जिन्हें सेवानिवृत होने के बाद इसलिए लिखना चाहता हूं ताकि निष्पक्ष एवं निडर होकर लिख सकूं । जिसमें पद,कद या हद की जंजीर कुछ भी बेबाक लिखने से न रोक पाए

9. सर लेखन, प्रकाशन, संपादन की भूमिकाओं में आप के कार्य क्षेत्र पर कुछ प्रकाश डालिए ।

लेखन सृजन के बारे में इससे पूर्व के प्रश्न में काफी कुछ कह चुका हूं । संपादक के तौर पर सृजन, खुल गया आसमान,अरुणिमा नागल बुलेटिन विस्फोटक आदि कई पत्र पत्रिकाओं के संपादक मंडल से जुड़ा रहा हूं।

Scanned with OKEN Scanner

10. सर , समाज का ऐसा कौनसा विषय है जिस पर आप सर्व प्रमुख रूप से बदलाव लाना अपेक्षित समझते हैं ?

मुझे लगता है कि आज सार्वजनिक जीवन के हिसाब से राजनीति में बदलाव की सबसे अधिक जरूरत है । वहां सेवा सेवा भाव से काम करने वाले लोगों की सख्त ज़रूरत है । इसी प्रकार से प्रशासन में भी ईमानदार एवं जन सरोकारों से जुड़े हुए अधिकारियों का आना एक बड़ा बदलाव लाएगा । जहां तक साहित्यिक क्षेत्र की बात है इस क्षेत्र से मठाधीशी एवं ग्रुपिज्म को हटाए जाने की भारी आवश्यकता है।

11. सर आपके जीवन के अविस्मरणीय पल के बारे में बताएं।

समझ नहीं आता कौन से अविस्मरणीय पल की बात करूं । जब मेरा पहला पत्र नवभारत टाइम्स में छपा उसकी खुशी को आज तक नहीं भूला हूं । जब पहली बार लेखन पर मानदेय प्राप्त हुआ वह पल भी आज तक हृदय में जीवंत है । जब एकांकी में अभिनय करने पर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने सीने से लगाकर पुरस्कार दिया तो उसे भी नहीं भूल पाता हूं लेकिन अपनी मां या बड़ी बहन की बगल में उनसे लिपट कर लेटने की बचपन की स्मृतियां उनका सिर में हाथ फिर आते हुए कोई गीत गुनगुनाना शायद मेरे जीवन का सबसे अवस्मरणीय पल है ।

12. सर , आपके जीवन का सबसे संघर्षमयी समय कौनसा रहा ।

मेरा जीवन तो रहा ही संघर्षमय है । बचपन में अभाव देखे, जवानी में पहचान बनाने का संघर्ष, किया पढ़ने लिखने हेतु भी संघर्ष, करना पड़ा । हां, ईश्वर की कृपा से जॉब बिना किसी संघर्ष के मिल गई । संघर्ष के बारे में मेरा सोचना है कि इससे दुखी होने या भागने की जरूरत नहीं है बल्कि संघर्ष को जीवन में 'संग हर्ष' कह कर आगे बढ़ना चाहिए।

अंत में, मैं यही कहूंगा

वह जीवन भी क्या जीवन,जिसमें राह कंटीली न हों ,
मंजिल का कब आनंद मिलता ,सड़कें जो पथरीली न हों,
बैठ पुष्प की सेज भला ,किसने कब क्या पाया 'बादल' ?
उपलब्धि का सुख ही क्या है,चमड़ी जो नीली पीली न हो।

धन्यवाद सर ,

आप के साथ यह वार्ता हम सभी को निरंतर प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा देती रहेगी।

हम समस्त नयी गूँज परिवार की ओर से आपको आभार व्यक्त करते हैं ।

(साक्षात्कार का शीर्षक आदि आप स्वयं ही तय करेंगे तो अच्छा रहेगा)

Scanned with OKEN Scanner

अक्टूबर अंक 2023 के लेखक परिचय

- डॉ घनश्याम बादल
  215, पुष्परचना, गोविंद नगर
  रुड़की
  9412903681
  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार
  Aryabrijeshsahu24@gmail.com
  9785837924
  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.
  321023

- डॉ उमेश प्रताप वत्स
  14 शिवदयाल पुरी
  निकट आईटीआई
  यमुनानगर हरियाणा
  पिन कोड – 135001
  मोबाइल नंबर- 9416966424
  Umeshpvats@gmail.com

- डॉ. कंचन जैन “स्वर्णा”
  अलीगढ, उत्तरप्रदेश
  8077212592

Scanned with OKEN Scanner

- डॉ शिवा धमेजा

  Drshivadhameja01@gmail.Com

  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

  9351904104

- महेश थार

  धार मध्यप्रदेश

  9340198976

  Mahesh.kiisss@gmail.com

- नरेंद्र सोनकर

  यमुनापार, करछना, प्रयागराज

  Naraina2001@gmail.com

- शिवराज आनंद(शिव कुमार साहू)

  सोनपुर तहसील रामानुज नगर सूरजपुर छत्तीसगढ़

  7747972274

- प्रिया देवांगन 'प्रियू'

  राजिम

  जिला-गरियाबंद छत्तीसगढ़

  priyadewangan1997@gmail.com

- तेजनारायण राय

  दुमका झारखण्ड

  +91620758699

Scanned with OKEN Scanner

UDYAM-RJ-17-0210612

Goonjnayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

नई गूँज

Design by -Rahul Deewan

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924

Scanned with OKEN Scanner